

أركان وشروط الإكراه

دراسة مقارنة في الفقه الإسلامي

دكتور

محمد أحمد مكين

مدرس الشريعة الإسلامية
كلية الحقوق - جامعة الزقازيق

(୯) ପାଞ୍ଜିଗାୟ ୮୦୧

“**کوئی کوئی نہیں کر سکتے۔**” (۱)

፳፻፲፭

କ୍ଷେତ୍ର ପାଇଁ ନିର୍ମାଣ କରିବାକୁ ଅନୁରୋଧ କରିଛନ୍ତି ।

三

تقديم:

الحمد لله الذي فصل بين الحلال والحرام بمقتضى شرعيه من الأحكام والصلوة والسلام على رسوله محمد بن عبد الله وعلى آله وأصحابه ومن تبعهم واهتدى بهديهم إلى يوم الدين.

وبعد ...

فهذه ثمرات قطفناها من موضوع شائك بعد استقراء في كتب الأصول والفروع.. نرجو أن تلقى بعض الضوء وتحقق شيئاً من الرجاء الذي ننشده في «أركان الإكراه وشروط صحته».

والله نسأل أن يهئ لنا من أمرنا رشداً وأن يوفقنا إلى البحث في هذا الموضوع مرة أخرى، عسى أن يهدينَا إلى مزيد من الكشف والإيضاح، حتى يكون كتاباً يضاف إلى التراث الإسلامي - فانه نعم المولى ونعم النصير.

المؤلف

(3) ପାଇଁ ପରିମା ହେଉଥିଲା ୧୦ ମୀୟାରୀ - କିମ୍ବା ଗତିହାନ୍ତି - ହେଉ ଏହାରୀ

(५) अप्रैल १९०१ के ३ बजे ०१ - इसके द्वारा उत्तर दिशा में एक अलग

- ፳፻፲፭ ዓ.ም? | በዚህ አገልግሎት ስለመስጠት የሚከተሉትን ደንብ የሚያሳይ

କୁଣ୍ଡଳା କଣ୍ଠ ପାତ୍ରରେ ଶୁଣି - ଜିନିଏ କହିଲା ଦୁଇମାତ୍ରାଙ୍ଗି ଦୁଇମାତ୍ରାଙ୍ଗି

ମନ୍ଦିରରେ କାହାର ପାତାରେ କାହାର ପାତାରେ କାହାର ପାତାରେ

କାହାର ପାଇଁ ଏହାର କାହାର ପାଇଁ କାହାର ପାଇଁ କାହାର ପାଇଁ

ગાડું હતું કરીએ કે “અને” આપણી પાત્રની વિશ્વાસી બાળીની જીવનની પ્રાણી વિશ્વાસી

“**ପ୍ରାଣ**” ଏବଂ “**ଜୀବ**” ଏବଂ “**ଜୀବନ**” ଏବଂ “**ଜୀବିତ**” ଏବଂ “**ଜୀବନକାରୀ**” ଏବଂ “**ଜୀବନକାରୀ**” ଏବଂ “**ଜୀବନକାରୀ**” ଏବଂ “**ଜୀବନକାରୀ**”

(१) दीर्घ समय के लिए विदेशी वासियों को भारतीय विद्या का अध्ययन करने की उपलब्धि नहीं है।

1980-01-12 0 0 0

ପାତ୍ର କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

१६८ विजय की दृष्टि से यह अपनी विजय की दृष्टि से यह अपनी

କେବଳ ପରିମାଣ କରିବାକୁ ପରିଚାରିତ ହେଲା

6.00-6.00— $\frac{1}{2}$ 1/2 संस्कृत विद्या/वाचन विद्या/वाचन विद्या:

ମୁଣ୍ଡର ପାତାରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

॥ २० ॥ १८ ॥ १७ ॥ १६ ॥ १५ ॥ १४ ॥ १३ ॥ १२ ॥ ११ ॥ १० ॥ ९ ॥

କେବଳ ଏକାନ୍ତରୀଣ : କାହାର ପିଲାଟି କାହାରେ

କାନ୍ଦିରିରେ ପାଇଁ ଏହାରେ କାନ୍ଦିରି କାନ୍ଦିରି

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ:

३८५

ପାଞ୍ଚ ଦାର୍ଶକ ହେଉଥାଏ । ତଥାରେ କୁଣ୍ଡଳ ମହିଳା ନାମରେ ଜୀବିତ କରିଛନ୍ତି ।

Digitized by srujanika@gmail.com

卷之六

٣- ويرى فريق ثالث : «أن الإكراه هو حمل المرء غيره على أمر كان يمتنع عنه قبل الإكراه بتخويف المكره بقدر الحامل على إيقاعه - ويصير الغير خائفاً به فائت الرضا بال المباشرة^(١) والإكراه ضد الرضا - والرضا : هو الرغبة في الشيء والإرتياح له - والإكراه يفسد الاختيار لأن الاختيار : هو الترجيح الفعل على الترك أو العكس.

وبالمقارنة بين هذه التعريفات الثلاث. نجد أن تعريف الفريق الثالث هو الراجح. لأن الشأن في التعريف أن يكون كاشفاً للمعرف بصورة واضحة وظاهرة بها يستطيع السامع أن يميزه مما عاده - وهذا يتحقق في التعريف الذي رجحناه واخترناه - لأن الإكراه المصطلح عليه الذي رتب الفقهاء عليه الأحكام الشرعية له شروط خاصة صرحت بها التعريف الثالث دون الأول والثاني.

المطلب الثاني: في أركان الإكراه^(٢) :

لا شك أن الإكراه لابد له من توفر ركن الإكراه حتى يتربّط عليه وجود الإكراه سواء كان بالنسبة للقول أو الفعل - والإكراه له ركنان :

الركن الأول: حمل الغير وقهره على ما لا يرضاه من فعل أو قول، فإذا وجد الحمل وجد الإكراه، وإذا انعدم الحمل انعدم الإكراه. فلو فعل الإنسان فعلاً وهو غير راضٍ عنه بدون حمل عليه، فهو بذلك يكون كارهاً لأداء الفعل لا مكرهاً عليه - فالمريض الذي يتناول الدواء مع كونه من المذاق على أمل الشفاء، فهو بذلك يكون كارهاً لتناوله الدواء لأجل الشفاء لا مكرهاً عليه بفتح الراء، لأنه أقدم على تناول الدواء باختياره من غير حمل وقهر عليه.

والذى هدد بقتل نفسه أو بقطع عضو من أعضائه إن لم يبيع داره فهو مكره لا كاره لأنه إذا باع داره في هذه الحالة فقد باعها بناء على حمل الغير وقهره.

الركن الثاني: انعدام الرضا : لأن الفعل الذي يقوم به الإنسان مختاراً لا يمكن أن يكون مكرهاً عليه. لأن الإكراه ضد الرضا - وهو أمر خفي فلا يلتقيان أبداً.

(١) كشف الأسرار ج ٤ ص ١٠٥٢ - التقرير والتحبير ج ٢ ص ٦٢.

(٢) الأركان : جمع ركن - والركن في اللغة : جانب الشيء الأقوى. كأركان المتنازل، ومنه قول الله تعالى «قال لو أن لي بكم قوة أو أوى إلى ركن شديد» هود الآية ٨٠.

وفي الاصطلاح الشرعى : فيرى الجمهور أنه ما توقف عليه وجود الشيء سواء أكان جزءاً من ماهيته أو كان خارجاً عنها. وعند الأحناف : بأنه ما تتوقف الماهية وهو جزء منها: أو هو ما لا يتصور وجود الشيء إلا به : وكان جزءاً منه «النظريات الفقهية للمؤلف» ص ٨٧.

وقال الإمام أبي حنيفة : أن الإكراه لا يكون إلا من السلطان، لأن غير السلطان لا يقدر على تحقيق ما هدد به - فلا يتحقق من غيره - لعدم قدرته على ما هدد به، ولأن القدرة لا تكون بلا منعة والمنعة للسلطان. ولذلك قيل أن مجرد الأمر من السلطان إكراه من تهديد.

والحقيقة أن قول الإمام أبي حنيفة هذا، إنما يتبنى على ما كان في عصر وزمان أبي حنيفة من أن الغلبة والمتعة لا تكون إلا للسلطان - فلما تغير الحال وفسد الزمان وصار لكل مفسد متلخص القدرة على إيقاع ما هدد به - فقد ترك أبو يوسف ومحمد - التقييد بكونه سلطاناً بناء على ما شاهدا في زمانهما من الفساد - ولذلك تغيرت الفتوى على قولهما لأنه في الحقيقة لا خلاف بينهم في الواقع لأنه اختلاف عصر وزمان لا اختلاف حجة وبرهان^(١).

الشرط الثاني: خوف المكره - بفتح الراء - من إيقاع ما هدد به المكره - بكسر الراء - في الحال بغلبة الظن - أى بأن ظن أنه يوقعه - وأن المكره أصبح عاجزاً كل المعجز عن الخلاص عن ذلك بالهرب أو الاستغاثة أو بالمقاومة.

(١) مجموع الأئم ج ٢ ص ٤٢٨ - تكملة الفتح ج ٩ ص ٢٣٢ . والقانون المدني وافق قول أبي يوسف ومحمد من أنه لابد من تمكن المكره من إيقاع ما هدد به دون تفرقة بين شخص وأخر، فقد جاء في الفقرة الثانية من المادة ١٢٧ «وتكون الرهبة قائمة على أساس إذا كانت ظروف الحال تصور للطرف الذى يدعىها أن خطراً جسيماً مهدداً يهدده فى النفس أو فى الجسم أو الشرف أو المال».

وعلى ذلك، فإن المكره - بكسر الراء - إذا أمكنه إيقاع ما هدد به، فإن الخطر يعتبر مهدداً لأنّه يهدد النفس ويضر بها، بصرف النظر عن شخصيته - ومنصبه إذ القراءة مطلاقة - أما قانون العقوبات فقد اعتبر هذا الشرط دون أن يفرق بين سلطان وعص - أما عدم التفرقة فيؤخذ من اطلاق المادة ٦١ من قانون العقوبات. وعدم تقييدها - أما أنه لابد من أن يكون المكره ممتنعاً من إيقاع ما هدد به - فذلك مأخوذ من نص المادة ٦١ «لا عقاب على من ارتكب جريمة الجاته إلى ارتكابها وقاية نفسه أو غيره من خطر جسيم على النفس على وشك الواقع به أو بغيره ولم يكن لرادته دخل في حلوله ولا في قدرته منه بطريقة أخرى» ولا يكون الخطر جسيماً وشك الواقع وليس في قدرة المكره منه إلا إذا كان المكره متمكناً من إيقاع ما هدد به.

الشيخ البرديسي ص ٣٦٠، عبدالمجيد مطلوب ص ١١٢ - الأشياه والنظائر للسيوطى ص ٢٠٨ .

ପ୍ରକାଶକ

(x) କାହାର ପାଇଁ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

ଗୀ ଦକ୍ଷ ତୁ ଜୀବିକୁ ହୁ ତୁ କି ? ତାଣ - କିମା ଯାଏ କି କିମାନିବ କି ? ||୫୩୭|| ତାର କି
ହୁ ତୁ କି ? କି ହୁଏ ଯାଏ କିମାନିବ କି ? ||୫୩୮|| କାହା - ଏ ଏ ଏ ଏ
ଗୁରୁତ୍ୱକାଳେ । ୧୮ ଶତାବ୍ଦୀର ଲକ୍ଷ୍ମୀ ନାମ କି ହୋଇଥାଏ ? ||୫୩୯|| ତାର କି ||୫୪୦||
କି ? ||୫୪୧|| କିମାନିବ କି ? ||୫୪୨|| ଏ ଏ ଏ ଏ ଏ :
ତୁ କି ? ||୫୪୩|| କିମାନିବ କି ? ||୫୪୪|| ଏ ଏ ଏ ଏ - ଏ ଏ ଏ ? ||୫୪୫||

॥ ४८ ॥

ଶ୍ରୀ କାନ୍ତିଲାଲ ପାତ୍ରଙ୍କ ମୁଦ୍ରଣ ।

بدين يقتل متعلق بإكراه بأن قال أفعله وإلا أقتلك - أو أكره على هذه الأشياء بنحو ضرب شديد أو حبس مديد أو قيد مؤيد خير المكره بعد زوال الإكراه عنه - بين فسخ العقد الصادر - ويرجع عن الإقرار لأنعدام الشرط الذي هو الرضا بالإكراه سواء كان الإكراه ملجنًا أو غير ملجن - وبين الإمضاء لأن العقد والإقرار يثبت الملك ولو بإكراه ويمنع النفاذ الذي لا يكون فيه حق الاسترداد للعاقد. لأن هذا النفاذ يتوقف على العقد بالطوع»^(١).

الشرط الرابع: أن يكون المكره ممتنعاً عن الفعل الذي أكره عليه قبل الإكراه إذ لو لم يتمتنع عنه لم يكن إكراهاً لفوات ركته وهو فوات الرضا. وفي ذلك دلالة على أن هذا الشرط مستدرك لحق نفسه - كإكراه على بيع ماله أو إتلافه بلا عوض، أو إتلاف عبده ولو بمال أو أجراً أخرى - أو لحق شخص آخر كإتلاف مال الغير - أو لحق الشرع - كشرب الخمر، والزنا، ونحوهما لأن إكراه^(٢) لهذه الحقوق بعدم الرضا لامتناعه قبل الإكراه.

(١) مجمع الأئمـ جـ ٢ـ صـ ٤٢٨ـ القـانـونـ المـدنـيـ يـواـفقـ الـفـقـهـ الإـسـلامـيـ فـيـ هـذـاـ الشـرـطـ حيثـ نـصـتـ الـفـقـرةـ الثـانـيـةـ مـنـ الـمـادـةـ ١٢٧ـ بـأـنـ الـأـمـرـ الـذـيـ هـدـدـ بـهـ الـمـكـرـهـ لـابـدـ وـأـنـ يـكـونـ مـتـضـعـنـاـ إـتـلـافـ نـفـسـ الـمـكـرـهـ أـوـ إـتـلـافـ عـضـوـ مـنـ أـعـضـائـهـ أـوـ إـتـلـافـ مـالـهـ أـوـ أـنـىـ مـنـ يـهـمـهـ أـمـرـهـ مـنـ النـاسـ غـيرـ أـنـ الـقـانـونـ يـعـتـبـرـ التـهـيـدـ بـأـنـىـ الـغـيـرـ سـوـاءـ كـانـ قـرـيبـاـ أـوـ غـيرـ قـرـيبـ إـكـرـاهـاـ وـالـشـرـيـعـةـ لـاـ تـعـتـبـرـ إـكـرـاهـ إـلـاـ فـيـ حـالـةـ التـهـيـدـ بـأـنـىـ الـغـيـرـ الـذـيـ يـهـمـ الـمـكـرـهـ.

أـمـاـ قـانـونـ الـعـقـوـيـاتـ فـلـاـ يـسـقـطـ الـمـسـئـولـيـةـ عـنـ الـمـهـدـدـ بـاتـلـافـ الـمـالـ.ـ وـأـنـ الـمـادـةـ ٦١ـ تـنـصـ عـلـىـ أـنـ الـخـطـرـ الـمـهـدـدـ بـهـ لـابـدـ وـأـنـ يـكـونـ وـاقـعـاـ عـلـىـ الـنـفـسـ،ـ وـعـلـىـ ذـلـكـ نـجـدـ أـنـ هـذـاـ الـقـانـونـ مـخـالـفـ لـلـفـقـهـ الإـسـلامـيـ فـيـ هـذـهـ الـحـالـةـ -ـ الـمـصـدـرـ السـابـقـ،ـ صـ ١١٤ـ.

(٢) تـبـيـنـ الـحـقـائـقـ جـ ٥ـ صـ ١٨٥ـ كـشـفـ الـأـسـرـارـ جـ ٤ـ صـ ١٠٥ـ وـمـجـمـعـ الـأـئـمـ جـ ٢ـ صـ ٤٢٨ـ وـهـذـاـ الشـرـطـ فـيـ الـقـانـونـ جـاءـ مـتـقـفـاـ مـعـ الـشـرـيـعـةـ الإـسـلامـيـةـ لـأـنـ إـكـرـاهـ معـناـهـ فـيـ الـقـانـونـ ضـفـطـ تـتـأـثـرـ بـهـ إـرـادـةـ الـشـخـصـ ،ـ وـلـاـ ضـفـطـ إـلـاـ إـذـاـ كـانـ الـمـكـرـهـ مـمـتـنـعـاـ عـمـاـ أـكـرـهـ عـلـيـهـ قـبـلـ إـكـرـاهـ أـمـاـ إـذـاـ كـانـ غـيرـهـ مـمـتـنـعـ فـلـاـ حـاجـةـ إـلـىـ الضـفـطـ فـلـاـ إـكـرـاهـ.

କୁଳାଳିରେ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ
ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ ପାଦମୁଖ

କୋଣ ହୁଏ : ଗାନ୍ଧି ଶ୍ରୀ ହାତେ । ୧୯୮୦ ମୁଣ୍ଡରି :

॥३॥ त्रिपाली ॥०७॥ ॥काश्चन्तः ॥

ਤੀ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋਏ :

ପ୍ରାଚୀ ଛିଠି । ॥୫୮୧୦ । ପ୍ରାଚୀ - ଗୋଟିଏ କୁଳାବ କି? କିମି ତେ । ॥୫୯୧୦ ଜାମ । ॥୫୯୨୦ ? କି
କି କୁଣ୍ଡଳ ଶଙ୍ଖ ଛିଠି । ॥୫୯୩୦ । ଶାରୀ କି କି କାହାର ନାହିଁ, କି କାହାର, କି କାହାର
କି କାହାର କିମି କିମି କିମି । ॥୫୯୪୦ । କିମି କିମି କିମି - ଜାମ । ॥୫୯୫୦ କିମି କିମି

କାନ୍ତିର ପାଦମଣି

የኢትዮጵያ የወጪ ተስፋ ነው እና የሚከተሉ የወጪ ተስፋ ነው

ଶ୍ରୀମତୀ ପାତ୍ନୀ ? ଏହି କାଳେ କିମ୍ବା ॥୩୦ - ଶ୍ରୀ କାର୍ଣ୍ଣ ଗାଁଛି ଧୂର - ଖିର୍ବି ଧୂର କାହିଁ
କାହିଁ ହିମା ? ॥୩୧ ଏହା - କୁଠି କିମ୍ବା ? ॥୩୨ ଶାକ କି କାହିଁ କିମ୍ବା ?

એવી પરી જાતિ નાલ «ગુરુચિંદ્રે તારી»

— ଶ୍ରୀ ପାତ୍ର କିମ୍ବା ଶ୍ରୀ ପାତ୍ର କିମ୍ବା ଶ୍ରୀ ପାତ୍ର କିମ୍ବା

፩፻፲፭ የፌዴራል ተስፋዎች ስርጓሜ እና ማረጋገጫ

الحربي على الإسلام جائز فعد اختياره قائماً في حقه إعلاء للإسلام، كما عد قائماً في حق السكران زجراً له. بخلاف إسلام الذمي بالإكراه فإنه لا يصح عند الشافعى لأن إكراهه عليه غير جائز - لأننا أمرنا أن نتركهم وما يدينون فلا يمكن جعل اختياره قائماً فاليعتد به.

ولصحة إكراه كل من المدين والمولى على الإيفاء والطلاق بعد المدة لكونه ظالماً بالمتنازع عن القيام بما هو واجب عليه، فإإكراه على أداء الواجبات لا يفيد الاختيار فلا تبطل التصرفات التي أكره عليها. وهذا حكم الشرع بعدم فساد الاختيار لأن ما أكره عليه المدين والمولى كان واجباً عليه. فكان الطلاق والبيع باختياره، لأنه يجب عليه أن يختار أداء الواجب، فإذا لم يختره أجبره الشارع عليه، وجعل هذا الإجبار غير مفسد للاختيار^(١).

وأما القسم الثاني: وهو الإكراه بغير حق : فهو على نوعين :
النوع الأول:

هو إن كان الإكراه عذراً شرعاً : بمعنى أن الشارع أباح للفاعل الأقدام على الفعل، بسبب الإكراه - وهذا النوع حكمه، أن تقطع نسبة الفعل عن الفاعل سواء أكره على قول أو فعل - لأن صحة القول إنما تكون بقصد المعنى واستعماله فيما وضع له شرعاً. فمثلاً لو أكره على إجازة أو زواج لم يقصد بالصيغة معناها، ولا ما وضعت له شرعاً. وهو الحال ومالك الانتفاع، وإنما قصد من ذلك دفع الأذى عن نفسه فلم يصبح تصرفة.

وإذا كان المكره عليه تصرفاً فعليه، فإن التكليف به يسقط ولا تثبت في حقه أثاره لأن صحة الفعل إنما تكون باختياره ليكون ترجمة عما في الضمير. ودليله عليه، والإكراه يفسد القصد والاختيار، لأنه يدل على أن المكره إنما تكلم لدفع الضرر عن نفسه لا لنيل ما هو المقصود في قلبه، فلا يكون معتبراً - وأيضاً نسبة الفعل إلى الفاعل بلا رضاه الحق الضرر به وهو غير جائز، لأنه

(١) التقرير والتخيير ج ٢، ص ٢٠٧ - أصول الفقه للشيخ الخضرى، ص ١٠٩.

॥ ੫ ॥

ତାର ପ୍ରାଚୀ ଜ୍ଞାନ କୁର୍ମ ଧ୍ୟାନ

અધ્યાત્મ પત્ર | ડા. કૃતી

କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ । କାହିଁ କାହିଁ । କାହିଁ କାହିଁ ।

الجنایات والمؤاخذة على ترك العبادات. فال فعل لا يعد جريمة إلا إذا وقع باختيار الفاعل - والتصرف لا يعتبر صحيحا إلا إذا قصده المتصرف - وترك العبادة أو إفسادها لا يكون معصية إلا بالقصد والاختيار.

أنواع الإكراه عند الحنفية:

أصل الحنفية في الإكراه : وهو الأمر الكلى الذي يتقرع عليه الأحكام في باب الإكراه عند أبي حنيفة وأصحابه - فال فعل المكره عليه عندهم، أما أن يكون قوله لا ينسخ كالطلاق والعتاق فينفذ كما ينفذ في الهزل بل أولى - لأنه مناف لل اختيار - والإكراه مفسد له لا مناف مع الاقتصاد على المكره أى الفاعل لأنه لا يمكن أن يجعل آلة للحام في.

إلا ما أتلاف من المال على نفسه باكراهه كالعتق فيجعل الفاعل آلة للحام في إتلاف مالية العتيق لأن الإتلاف يتحمل ذلك. فيتضمن الحامل للفاعل قيمة العبد موسرا كان أو معسرا، لأن هذا ضمان إتلاف فلا يختلف باليسار والإعسار ويثبت الولاء للفاعل لأنه بالإعتاق وهو مقتصر على الفاعل ولا يمتنع ثبوت الولاء لغير من وجب عليه الضمان - كما في الرجوع عن الشهادة على العتق، فإنه يجب الضمان على الشهود والولاء للمشهود عليه. لأن الولاء كالنسب، ولا سعاية على العبد لأحد لأن العتق نفذ فيه من جهة مالكه، ولا حق لأحد في ماله. بخلاف ما لم يتلف كاكراه الزوجة المدخول بها على أن تقبل من زوجها الخلع على مال إذ الطلاق يقع إذا قبلت.

ولا يلزمها المال لأن الإكراه قاصرا كان أو كاملا بعدم الرضا بالسبب والحكم جميعا والطلاق غير مفترى إلى الرضا والتزام المال مفترى إليه وقد انعدم بخلاف الإكراه في الزوج على أن يخلعها على مال فقيلت غير مكرهه فإنه يقع الخلع لأنه من جانبه طلاق - والإكراه لا يمنع وقوعه، ويلزمها المال لأنها التزمت طائعة بازاء ما سلم لها من البيروت.

وإن كان الإكراه قوله ينسخ فسد كالبيع والإجارة، لأنه لا يمنع انعقاده لصدره من أهله في محله - ويمنع نفاذه لأن الرضا شرط النفاذ. وقد فات به فانعقد فاسدا حتى لو أجازه بعد زوال الإكراه صريحا أو دلالة صح لزوال

(1) ፩፻፲፭ ዓ.ም. በ፩፻፲፭ ዓ.ም. ተስፋ ስለሚከተሉት አንቀጽ መሆኑን የፌዴራል

କାହିଁ କାହିଁ ।

Digitized by srujanika@gmail.com

ପ୍ରାଚୀନ କବିତା ମଧ୍ୟାମ୍ଭାଦ୍ରି ପାଇଁ ଏହା କବିତା ହାତିଲାଗଲା ।

ପ୍ରକାଶିତ ଦିନ ।

ਤੇ ਵੀ ਹੈ ਪ੍ਰਾਣ | ਕਿਸੀ ਤੋਂ ਜੀਵ ਦਾ ਹੈ ਸੁਖੀ ਹੈ ਵੀ? | ਆਖਾਨੂੰ ਜੀਵੇਂ | ਆਖੀ :

କେବଳ ଏହାରେ ନାହିଁ - ଏହାରେ ନାହିଁ - ଏହାରେ ନାହିଁ - ଏହାରେ ନାହିଁ -

४८।(१)

॥ ४ ॥

قليلة - وكان المهدد به من غير ذوى المرءات فلا يكون إكراها - وإن كان من ذوى المرءات ومن شرفاء الناس كالعلماء وغيرهم كان ذلك إكراها.

وأعدام الرضا في هذا النوع يكون بالحمل على المكره عليه، بضرب لا يفضى إلى تلف عضو وحبس - فإنما يعدم الرضا خاصة لتمكن المكره من الصبر على المكره به فلا يفسد هذا الاختيار الإكراه^(١). وهذا النوع يتفق مع النوع الأول في إعدام الرضا، ويختلف عنه في أنه لا يفسد الاختيار.

وأما التهديد باتفاق المال عند المالكية فقد اضطربت الرواية عندهم، حيث جاء في الشرح الصغير «اعلم أنه جرى في التخويف بأخذ المال ثالث أقوال : قيل إكراه، وقيل ليس بإكراه، وقيل إن كثرة إكراه وإلا فلا، الأول لمالك والثانى لأنصيغ والثالث لابن الماجشون أى إن كان كثيراً فإكراه وإن كان قليلاً لم يكن إكراها»^(٢).

النوع الثالث: الإكراه المعنوى - أو الأدبى :

هذا النوع يعدم تمام الرضا، ولا يعدم الاختيار، ويكون عن طريق التهديد بحبس أحد الفروع وإن نزل كاً لابن، وابن الإبن، أو أحد الأصول وإن علا كالأب والأم وكذلك الزوجة - وكل ذي رحم محرم كالأخوة والأخوات، أو ما يجري مجرى ذلك، فما يصيب الإبن يحبس أبيه من الأذى ليس ذلك أذى حسياً يقع جسمه وإنما هو أذى أدبي ولأن القرابة المتيبة بالمحرمية بمنزلة الولاد؟

فكثير من العلماء لم يجعلوا هذا النوع من الإكراه لفقد ركته، وهو انعدام الرضا - خلافاً لبعض العلماء فإنهم يرون أن هذا النوع ضمن أنواع الإكراه مع عدم ركته - أى داخل في معنى الإكراه لغة كما أشار إلى ذلك صاحب الكشف - وهو أن وجه عدم إدخال ذلك القسم في معنى الإكراه شرعاً : عدم ترتيب أحكام

(١) التقرير والتحبير جـ ٢، ص ٢٠٦ - فتح القدير التكملة جـ ٩، ص ٢٣٤.

(٢) حاشية الصاوي على الشرح الصغير جـ ٢، ص ٥٤٧ و ٥٤٨ ويمثل ذلك وفي حاشية الدسوقي على الشرح الكبير جـ ٣، ص ٣٦٨.

(λ) **॥ପ୍ରମାଣ ନିର୍ଦ୍ଦେଖିତା ହେଉଥିଲା ଏବଂ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା**

(1) કાંગડુલી પટ્ટણ દ્વારા, એવા

“**କେବଳ ଏହାରେ ପାଇଲା ତାଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଦେଖିଲା ଏହାରେ କିମ୍ବା ଏହାରେ କିମ୍ବା**
ଏହାରେ କିମ୍ବା ଏହାରେ କିମ୍ବା ଏହାରେ କିମ୍ବା ଏହାରେ କିମ୍ବା ଏହାରେ କିମ୍ବା

ପ୍ରକାଶକ ମନ୍ତ୍ରୀ

«والإكراه يكون بخوف مؤلم من قتل أو ضرب أو سجن ولو لم يطل أو قيد ولو لم يطل، أو صفح لذى مروءات أو قتل ولده وإن سفل أو بعقوبة إن كان بارا لا يخوف قتل أجنبي، وأما قتل الأب، فقيل إكراه كالولد وهو الطاهر وقيل لا كالأخ»^(١).

وبناء على هذا النص تجد أن فيه دلالة على أن التهديد بعقوبة الإبن ومنها الحبس إكراه عند المالكية، وهذا الإكراه بطريق التهديد فيه ليس بالأذى الحسى الذى يصيب جسم الإنسان المهدى ويقرعه - وإنما هو أذى أدبى، والتهديد بهذا الطريق الذى يعد تمام الرضا هو الإكراه الأدبى كما سيق بيانه.

غاية ما فى الأمر : إن القول بالإكراه الأدبى يكون فى أضيق الحدود عند المالكية بخلافه عند الحنفية فإن مجاله واسع فالتهديد يحبس الأخ لا يعد إكراها عند المالكية و يعد إكراها عند الحنفية^(٢).

والذى تراه وترجحه : إن الإكراه الذى يعتبر حالة من حالات الاضطرار الشرعية هو الإكراه الملجىء لقوله صلى الله عليه وسلم : «أن الله رفع عن أمتى الخطأ والنسيان وما استكرهوا عليه»^(٣).

المبحث الثالث في التكييف الشرعى للإكراه

يشتمل هذا المبحث على الموضوعات الآتية : ما يقع عليه الإكراه، ومعيار الإكراه فى الشريعة : وتحديد المعيار المادى عند الفقهاء وسوف نوضح كل موضوع فى مطلب مستقل بشئ من التفصيل :

(١) الشرح الصغير ج ٢، ص ٥٤٧، حاشية الدسوقي على الشرح الكبير ج ٣، ص ٣٦٨.

(٢) التقرير والتحيير ج ٢، ص ٢٠٦ - المبسوط ج ٢، ص ٧٠ - الشرح الصغير ج ٢، ص ٥٤٧ والشرح الكبير ج ٢، ص ٣٦٨.

(٣) رواه الطبرانى فى الكبير عن ثوبان وأبى الدرداء وأخرجه ابن ماجه وابن حبان والحاكم عن ابن عباس مرفوعاً وذكره غيرهم، سبل السلام ج ٢، ص ٢٣٢.

Digitized by srujanika@gmail.com

Digitized by srujanika@gmail.com

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥੫੮੧॥ ਕਾਨੂੰਦੀ ਹੈ ਇਹ ਜਾਣਿ ॥ ਸਾਡਾ ਚਲਿ
 ਪਾਵਿ ॥ ਜੀਉ ਛਾਡਾ ਰਾਖਿ ਜੇ ॥ ਤੇ ਚਾਹੋ ਵੇਂ ॥ ਆਤਮੁ ਜੇ ਇਸੀ ਵਿਖੇ ਜੰਗ ਕਰੀ
 ੧- ਗੁਝਾਨਿ ॥ ਇਹੀ ਅਖਿ ਤੰਨੀ ਹੈ ॥ ਆਚਿ ਛੁਲ ਯਾਹੁਣਿ ॥ ਗੀ ਹੈ ਜੰਨੇ ਜੰਨੇ ਗੇ ॥ ਆਚਿ
 ਬਿਲਾਂਦਿ ਭਾਵਿ ॥ ਆਵਿ ॥
 ੧- ਸਾਡਾ ਚਲਿ ॥ ਇਹੀ ਅਖਿ ਤੰਨੀ ਹੈ ॥ ਆਵਿ ਯਾਹੁਣਿ ॥ ਗੀ ਹੈ ਜੰਨੇ ॥ ਆਚਿ, ਬਿਕਿ ॥ ਆਚਿ
 ਰਾਵਿ :

Digitized by srujanika@gmail.com

۱۰۷

٣- والأفعال التي تعلق بها حق الغير بالإكراه على القتل والزنا وإتلاف المال فهؤلاء الفقهاء لا يتحقق الإكراه عندهم في الأفعال سواء تعلق بها حق الله أو حق العبد - مستدلين على ذلك بما روى عن ابن مسعود أنه قال «ما من كلام يدرأ عنى سوطاً أو سوطين عند ذي سلطان إلا كنت متكلماً به» وجه الدلالة من ذلك أن ابن مسعود لم يذكر من المكره عليه إلا القول فدل هذا على أنه لا يتحقق الإكراه إلا في القول، لأن التخصيص بالذكر يدل على نفي الحكم عما عداه - ولكن هذا الاستدلال مردود على قائليه إلا ربما أن يكون ما قاله ابن مسعود كان على سبيل التمثيل وهو يريد أن الفعل في حكم القول^(١).

ويرى الظاهري إن الإكراه يصح بالأفعال التي تحل بالاضطرار، وهي التي تتعلق بحق الله كأكل الميتة وشرب الخمر، والسباحة لغير الله وما إلى ذلك.

أما الأفعال التي تتعلق بحقوق الغير وتحل بالضرورة بالإكراه على القتل والزنا وإتلاف مال الغير، وكل ما فيه تعد على الغير في النفس أو العرض أو المال فهذه لا يتحقق الإكراه فيها بمعنى أن الأفعال التي تضر بالغير لا يتحقق فيها الإكراه عند الظاهري لأنه لا يجوز للإنسان أن يدفع الضرر عن نفسه بإضرار غيره، وقد قال بذلك أكثر فقهاء المالكية^(٢).

يقول ابن رشد «الإكراه على الأفعال إن كان يتعلق بها حق لمخلوق كالقتل والغصب فاختلاف في أن الإكراه غير نافع في ذلك^(٣).

والمختار من ذلك هو الرأي القائل أن الإكراه يصح بالأقوال والأفعال بشرط أن القلب مطمئناً بالإيمان، لأن سند هذا الرأي الآية الكريمة «ومن كفر بالله من بعد إيمانه إلا من أكره وقلبه مطمئن بالإيمان...» خلافاً لمن قال بصحة

(١) القرطبي ج٦، ص ٣٧٩٩ دار الشعب - الشیخ البردیسی، ص ٢٩.

(٢) الشرح الصغير ج٢، ص ٥٣٦ وما بعدها - حاشية الدسوقي على الشرح الكبير ج٣، ص ٣٦٨ - المطلي لابن حزم ج٨، ص ٢٣٥.

(٣) بداية المجتهد ج٢، ص ٥٩٣.

المطلب الثاني: في معيار الإكراه عند الفقهاء

الإكراه له معياران: أولهما معيار مادي، وهو عبارة عن المادة التي يتحقق بها الإكراه من الحبس، والخنق، والضرب، والغط في الماء مع الوعيد والقيد، ونحو ذلك فإنه يكون إكراها.

والثاني: معيار نفسي: وهو عبارة عما يحدث في النفس بسبب التهديد من التأثير والخوف ولما كان الإكراه لا يمكن تحقيقه بغير ركنه وهو انعدام الرضا - فإن العلماء لم ينظروا إلى المادى فحسب - بقطع النظر عن المعيار النفسي وما يحدثه التهديد في نفس المكره من تأثير وما يحيط به من ملابسات إذا انعدام الرضا لا يكون إلا حيث يكون الخوف من المهدد به، لذلك نظر العلماء إلى المعيار النفسي وقالوا لابد من اعتبار حدوث الخوف في نفس المكره فما يون إكراها في حق شخص لا يكون إكراها في حق شخص آخر، وما يعتبر في مكان إكراها كالتهديد بالقتل في مغارة لا يكون إكراها في مكان آخر كالتهديد بالقتل أمام الناس والحكام. وما يكون إكراها بالليل قد لا يكون إكراها بالنهار وما يكون إكراها للأئم لا يكون إكراها للذكور، وما يكون إكراها للمريض قد لا يكون إكراها للصحيح^(١).

إذا ترتب على هذه الأمور وما شاكلها مخاطر يخشى منها ال�لاك على النفس أو المال - وكذلك الجوع والعطش الشديد إذ أضيف منهما ما ذكر - أما الإكراه فمصدر الخطر فيه التدخل المباشر من الإنسان الذي يكره غيره على إتيان فعل محظى باستعمال قوته المادية المسيطرة على المكره والتي تجعله يتحرك بحركة من أكره - وأما بتحديد القتل أو الضرب الشديد إن لم يمتثل لارادته ويفعل.

راجع : الأشباه والنظائر للسيوطى ص ٨٤ - والأشباء لابن نجيم ص ١٠٨ حاشية الحموى عليه - الأشياء لابن السبكى مخطوط ورقه ١٢ مكتبة جامعة الأزهر رقم ٥٢ خاص المحلى لابن حزم ج ٨، ص ٢٣١.

نظرية الضرورة الدكتور يوسف قاسم ص ٨٩ وما بعدها.

(١) المفنى والشرح الكبير ج ٨، ص ٢٦١ - القواعد الأصولية لابن اللحام ص ٤٨ - الشرح الصغير ج ٢، ص ٥٤٦.

- (०) કાણે હાર્દિક ને બાળોએ
 (૩) પાણીનું હાર્દિક ને બાળોએ
 (૧) પાણીનું હાર્દિક ને બાળોએ
 (૧) હાર્દિક ને બાળોએ
 (૧) હાર્દિક ને બાળોએ

॥ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତକାଣିକା ପାଇଁ ଏହା ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ ପାଠ ହୁଏଥିଲା ।

ଶ୍ରୀ କୃତ୍ତବ୍ୟାମିନ୍ଦ୍ରା ପାତ୍ର ହେଲା ଏହାର ପାତ୍ରରେ ଯାହାରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା

ঘৃণিত হওয়ার কারণে একজন প্রতিষ্ঠানের সম্মতি পাওয়া যাবে।

କାହାର ପାଇଁ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

“楚人以爲然”：《漢書》

ପାତ୍ର ହେଲାମ ଯାଏନ୍ତିମାତ୍ରମ୍ଭାବୀତିକାରୀ

תְּמִימָה תְּמִימָה תְּמִימָה תְּמִימָה תְּמִימָה תְּמִימָה תְּמִימָה תְּמִימָה

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ଏହିପାଇଲା ଅନ୍ତରେ ଏହିପାଇଲା

॥ ੪੩ ॥ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਮਿਸ਼ਨ (ਡਬਲਯੂਏ) ॥

କୁଣ୍ଡଳ ପରିମାଣରେ ଉଚ୍ଚ ଦେଖାଯାଇଛି ।

فالمتتبع لهذه النصوص يجد أنها تدل على أن المعتبر عند الفقهاء هو المعيار النفسي وهو حدوث الخوف في نفس المكره سواء أكانت مجتمعة أو منفردة ولذلك لم يشترطوا تيقن وقوع المهدد به بل اكتفوا بمجرد غلبة الظن بوقوعه وكذلك لم يشترطوا جدية الحامل حتى لو كان هازلاً في تهديده، ووقع في قلب المهدد أنه جاد كان مكرهاً كل ذلك يدل على أن معيار الإكراه عند الفقهاء نفسي لا مادي إذ لا بد عندهم في تحقق الإكراه من مراعاة حال المكره^(١).

المطلب الثالث: في تحديد المعيار المادي عند الفقهاء

المتبوع لأراء الفقهاء في كتب الفروع الفقهية وقواعدها، وكتب الأصول وقواعدـهـ يـجـدـ أنـ جـمـهـورـ الفـقـهـاءـ يـرـىـ أنـ المـعـيـارـ المـادـيـ هوـ التـهـديـدـ الذـيـ يـبـعـثـ فـيـ نـفـسـ المـكـرـهـ - بـفـتـحـ الرـاءـ - الـأـلـمـ الشـدـيدـ، أوـ الـغـمـ الواـضـحـ بـحـيـثـ يـؤـثـرـ الإـقـدـامـ عـلـىـ مـاـ أـكـرـهـ عـلـيـهـ، حـتـىـ يـسـتـطـعـ أـنـ يـتـخـلـصـ مـاـ هـدـدـ بـهـ. فـتـهـدـيـدـ إـلـيـانـ غـيـرـهـ، بـالـقـتـلـ أـوـ الـقطـعـ أـوـ الـضـرـبـ أـوـ الـحـبـسـ أـوـ الـخـنـقـ زـوـ الـعـصـرـ، إـنـ لـمـ يـتـلـفـ طـلـبـ مـنـهـ لـلـخـلـاصـ مـاـ هـدـدـ بـهـ لـشـدـةـ الـضـرـرـ.

غير أنـ الجـمـهـورـ لمـ يـحدـدـ فـيـ الضـرـبـ مـثـلـ عـدـدـ مـعـيـنـاـ، وـلـاـ فـيـ الـحـبـسـ مـدـةـ مـعـيـنـةـ وـلـاـ فـيـ الـقطـعـ جـزـءـ مـعـيـنـ. بلـ وـكـلـ أـمـرـ ذـلـكـ إـلـىـ الـحـاـكـمـ - ولـذـلـكـ قـالـ مـحـمـدـ اـبـنـ الـحـسـنـ «وـأـمـاـ الـحـبـسـ وـالـتـقـيـدـ فـلـيـسـ فـيـهـمـاـ عـنـدـنـاـ أـيـضاـ حـدـ تـحـدـهـ. وـلـكـنـ عـلـىـ مـاـ يـجـيـءـ الـاغـتـنـامـ بـيـنـ الـحـبـسـ وـالـتـقـيـدـ، ثـمـ قـالـ وـلـذـلـكـ عـلـىـ مـاـ يـرـىـ الـحـاـكـمـ، إـذـ رـفـعـ الـأـمـرـ إـلـيـهـ فـمـاـ رـأـيـ أـنـ كـرـهـ جـعـلـهـ كـرـهـاـ وـمـاـ رـأـيـ أـنـ لـيـسـ بـكـرـهـ أـلـزـمـ فـيـ إـقـرـارـ»^(٢).

وـأـمـاـ الطـاهـرـيـةـ وـإـلـمـامـيـةـ: فـيـرـونـ أـنـ المـعـيـارـ المـادـيـ لـلـإـكـراهـ هـوـ مـاـ تـعـارـفـ عـلـيـهـ النـاسـ وـالـقـوـةـ وـالـمـرـادـ بـالـنـاسـ هـنـاـ هـمـ الـعـقـلـاءـ الـذـيـنـ يـؤـخـذـ بـأـرـائـهـمـ، وـلـاـ شـكـ أـنـهـ لـاـ يـحـكـمـونـ بـتـحـقـقـ إـلـاـ إـذـ كـانـ المـهـدـدـ بـهـ أـشـدـ عـلـىـ الـمـكـرـهـ مـاـ طـلـبـ مـنـهـ فـيـرـشـونـ إـقـدـامـ عـلـىـ مـاـ أـكـرـهـ عـلـيـهـ تـخـلـصـاـ مـاـ هـدـدـ بـهـ^(٣).

(١) الإكراه للشيخ البرديسي، ص ٢٨.

(٢) تكميلة فتح القدير ج ٩، ص ٢٣٥ وما بعدها.

(٣) المحتوى لأبن حزم ج ٨، ص ٢٤٠.

(1) १८७० वर्षात् ग्रामीणी नगर - १८७१ वर्षात् ग्रामीणी नगर ।
 (2) १८७० वर्षात् ग्रामीणी नगर - १८७१ वर्षात् ग्रामीणी नगर ।
 (3) नगरी ग्रामीणी नगर ।

“**אָמַרְתִּי** לְפָנֶיךָ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ וְאֶת-**חַדְשָׁתְךָ** תְּבִרְכֵנִי
בְּעַמְקָמֵךְ כִּי-**מְלֵא** אָנֹכִי כְּבָנָךְ” (ב').

لأن الإكراه لا يكون إلا بالوعيد فإن الماضي من العقوبة فيما بعد وهو في الموضوعين واحد، وأنه متى توعده بالقتل وعلم أنه يقتله فلم يبيح له الفعل. أفضى إلى قتله وإلقائه بيده إلى التهلكة ولا يفيده ثبوت الرخصة بالإكراه شيئاً.

وقال ابن تيمية : إذا غلب على ظنه أنه يضره في نفسه أو أهله أو ماله فإنه يكون مكرها - ولا فرق بين أن يكون الإكراه من السلطان أو من لص أو من متغلب نص عليه أحمد في رواية المروزى في المتغلب - وأما الشتم والسب فلا يكون إكراها رواية واحدة في حق أحد ممن يتآلم بالشتم أو لا يتآلم.

فقد جاء في المغني : فأما السب والشتم فليس بإكراه وإن كان من ذوى المروعات على وجه يكون أخراضا لصاحب وخصاله وشهوة في حقه فهو كالضرب الكبير في حق غيره^(١).

قال بعض الفقهاء زن الضرب والحبس والقيد مختلف باختلاف المكره. فان من الناس الذين لا يتآلمون بالضرب والحبس والقيد. فالإكراه له بالقتل وأخذ المال لا غير فإذا الضرب والحبس. فإن هؤلاء لا يدعونه إكراها. بل يجدون للضرب حلاوة وإن كان من أهل المروعات فالضرب والحبس والقيد إكراه في حقهم. لأن هذا فيهم كالقتل والقطع. وأخذ المال في العين. ويلزم على هذا التفريق بين من لم يؤلمهم من ذوى المروعات وبين غيرهم. أن يفرق بينهم كذلك في السب والشتم^(٢).

وأما المالكية فيرون أن الإكراه يتحقق بصفع ذى مروعة فقد قال الدردير : «إن الإكراه يكون بخوف قتل إن لم يطلق أو ضرب مؤلم أو سجن أو قيد، أو كصفع بكاف في حق ذى مروعة يملأ»^(٣). وكذلك يتحقق الإكراه عندهم بالنسبة إذا كان التهديد لواحد من الأصول كالاب والأم... وإن علا. أو من الفروع كقتل الإن فإن سفل لا غيرهما، من أخ أو عم أو خال وغيرهم - وعلى ذلك فلو قال له

(١) المغني والشرح الكبير جـ ٨، ص ٢٦٢.

(٢) القواعد الأصولية لابن الحمام ص ٤٨ - السيوطي ص ٢٠٨.

(٣) الشرح الصغير جـ ٢، ص ٥٤٦. القرطبي جـ ١، ص ٣٧٩٨ دار الشعب.

(୧) କେତେ? ॥ ଜ୍ଞାନି ୮୦ ୨୦୮୧, ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ୩୦ ପାତା । ପାତା ୧୨, ୨୦୭୯୩ ଫଲ ॥ ଜ୍ଞାନ

॥ ଜ୍ଞାନ ୨ ॥ ଚରଣ ପାଦ ପାତା ॥

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ୪ ହିନ୍ଦୁ ପାଦ ପାତା ୨ । ପାତା ୧୩ ଏହି କଥା କଥା କଥା
କଥା କଥା । ଜ୍ଞାନି ୧୦ ୨୦୮୧, ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ୩୦ ପାତା । ପାତା ୧୩ ଏହି
କଥା କଥା କଥା କଥା କଥା । ପାତା ୧୩ ଏହି କଥା କଥା କଥା କଥା । ପାତା ୧୩
ଏହି କଥା କଥା । ପାତା ୧୩ ଏହି କଥା କଥା । ପାତା ୧୩ ଏହି କଥା କଥା । ପାତା ୧୩
ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି ।

ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି ।

ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି ।
ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି ।
ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି । ପାତା ୧୩ ଏହି ।

ଏହି ।

ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି ।
ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି ।

ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି ।

ଏହି । ଏହି ।

ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି ।
ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି ।

ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି ।

ଏହି ।

ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି । ଏହି ।

فهؤلاء الأئمة يقتصرن على المعيار المادي للإكراه على القتل وما الحق به، لزمن طريقة الجمهور لا تكاد تتضبط فإن الضرب الذي يخوف به يختلف بقوة المكره وضعفه ويختلف باختلاف تحمل الآلام، وأن المال الموف باتلافه يختلف باختلاف مراتب أصحاب الجاه والمرءات وكل ذلك يؤدي إلى عدم التهديد^(١).

وخلال ذلك، أن هذا الاختلاف وعدم الضبط لا يؤدي إلى الخلط وعدم التهديد إذا علمنا ذلك فإنه يتبيّن لنا رجحان مذهب الجمهور، فالتعزيز الموكول أمره للحاكم يتفاوت تفاوتاً بينا بتفاوت الأشخاص ولم يقل أحداً أن ذلك يؤدي إلى الخلط وعدم التهديد، ومما يؤيد ذلك ما رواه محمد بن الحسن بسنده عن ابن مسعود أنه قال: «ما من كلام يدرأ عن ضررين عند ذي سلطان إلا كنت متكلماً به» وقول الصحابي حجة إذا لم يصلح له مخالف ولا تعلم فيكون هذا بمثابة إجماع سكتى.

وببناء على ذلك فالذى نراه أن الإكراه يحصل بكل ما يؤشر العاقل الإقدام عليه ويكون المكره بكسر الراء قادراً على تنفيذ ما هدد به، وغلب على ظن المكره أنه سنقذه وذلك باختلاف الأشخاص والأفعال المطلوبة، والأمور المخوف بها – فقد يكون الشيء إكراها في شيء دون غيره وفي حق شخص دون آخر^(٢).

والحمد لله الذي وفقنا إلى سبيل الرشاد.

وصلى الله على سيدنا محمد وعلى آله وصحبه وسلم،

المؤلف

(١) القرطبي ج٦، ص٣٧٩٩، البرديسي ص٣٢.

(٢) القواعد الأصولية لابن اللحام، ص٤٩.

०६०८-

१- ते इस ते लोगों का जीवन है विनाशक। अतः यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

२- एक व्यक्ति का जीवन यह है कि उसका जीवन का अनुभव है।

०८६-

३- अपने विवेक विवेक विवेक - यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

०८७-

४- गंगा जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

५- यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

६- यह जीवन का अनुभव है।

७- यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

८- यह जीवन का अनुभव है।

९- यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

१०- यह जीवन का अनुभव है।

११- यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

१२- यह जीवन का अनुभव है।

१३- यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

१४- यह जीवन का अनुभव है।

१५- यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

१६- यह जीवन का अनुभव है।

१७- यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

१८- यह जीवन का अनुभव है।

१९- यह जीवन का अनुभव है। अतः यह जीवन का अनुभव है।

२०- यह जीवन का अनुभव है।

इनमें जीवन का अनुभव

- ٢- الشرح الصغير للإمام أحمد الدردير - تحقيق د/ مصطفى وصفى.
- ٣- حاشية الصاوي على الشرح الصغير للإمام أحمد الصاوي.
- ٤- الخرشى - شرح أبي عبدالله محمد الخرشى على المختصر الجليل للإمام أبي الضياء سيدى خليل.
- ٥- حاشية الشيخ على العدوى على الخرشى.
- ٦- حاشية الدسوقي على الشرح الكبير للشيخ محمد عرفة الدسوقي.
- ٧- الشرح الكبير لأبي البركات أحمد الدردير مع تقريرات للشيخ محمد عليش ١٣٥٥هـ - ١٩٣٦م.
- ٨- الفروق - للعلامة شهاب الدين أبي العباس أحمد بن ادريس بن عبد الرحمن الصنهاجى الشهير بالقرافى المتوفى سنة ٦٨٤هـ.

المذهب الشافعى:

- ١- الأُم - للإمام أبي عبدالله محمد بن ادريس الشافعى المتوفى سنة ٢٠٤هـ.
- ٢- المجموع شرح المذهب للإمام النووي : أبي زكريا يحيى بن شرف النووي المتوفى سنة ٦٧٦ طبع ونشر دار الفكر بمصر.
- ٣- مفتى المحتاج إلى معرفة ألفاظ المنهاج للشيخ محمد الخطيب الشريينى على متن منهج الطالبين للإمام النووي السابق المتوفى سنة ٩٧٧هـ.
- ٤- الأشباه والنظائر لابن السبكي مخطوط، المتوفى سنة ٧٥٦ والتاج السبكي المتوفى سنة ٧٧١هـ.
- ٥- الأشباه والنظائر - للإمام جلال الدين السيوطي، المتوفى سنة ٩١١هـ.

المذهب الحنفى:

- ١- المفتى - للإمام موفق الدين أبي محمد عبدالله بن أحمد بن محمد ابن قدامة المقدسى المتوفى سنة ٦٣٠هـ.
- ٢- الشرح الكبير على متن المقنع للشيخ شمس الدين أبي الفرج عبد الرحمن ابن أبي عمر محمد بن أحمد بن قدامة المقدسى المتوفى سنة ٦٨٢هـ.

卷之三

፳፻፲፭ ዓ.ም. በ፳፻፲፭ ዓ.ም. ከ፻፲፭ ዓ.ም.

፩- የዚህ በቃል የሚከተሉ የሚመለከት ነው.

અર્થાતુઃ કરીને

• 364 •

۱۰- گزینشی از مقالات علمی پژوهی ایرانی

۱۹۶۴-۱۸۸۱۳-۷۷۲۷۳

— | የዕለታዊ | የመሸጊያ : ተስፋይ? ስለዚህም የሚከተሉትን በኋላ መረጃ ይገልጻል

સુરત :

۷- ﻪـ ﺍـ ﻰـ ﻢـ ﻰـ ﻭـ ﻦـ ﻰـ ﻭـ ﻮـ / ﻪـ ﻰـ ﻭـ ﻮـ ﻰـ ﻭـ ﻮـ ﻰـ ﻭـ ﻮـ

$$A(3)(\theta) = A_{bb}(\theta)$$

አ-መንግሥት የሰውን ተስፋይ እና ስራውን ተስፋይ / ገዢ መሆኑን የሰውን ተስፋይ እና ስራውን ተስፋይ

$$1 \cdot 3 \cdot 1^{\otimes} = 1 \vee b \cdot 1^{\otimes}$$

४०८ गुरु

THE WOODS

የኢትዮጵያውያንድ የፌዴራል ስርዕስ ተስፋይ እና የሚከተሉት የሚከተሉት የሚከተሉት

Digitized by srujanika@gmail.com

3- የሸጂ ተቋርቃው ስራ በመስቀል ተናግኙ እና በመስቀል ተናግኙ

ପ୍ରମାଣିତ ହେଲା କାହାରେ.

ଅ-ପାତ୍ରମଣି ଶିଳ୍ପୀ, ପ୍ରକାଶନ ପାତ୍ରମଣି ପାତ୍ରମଣି । ୧୯୭୩

ପ୍ରକାଶିତ

— ፳፻፲፭ ዓ.ም. በመስቀል ስምን ከፌዴራል ተስተካክለ

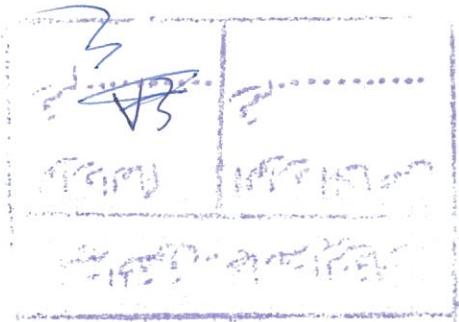
ጥ፡

॥०३७॥ : गैरकुन्ति वृत्ति गीते एवं ॥४३॥ ॥४४॥ ॥०३८॥

ପ୍ରକାଶକ

EDITOR-IN- CHIEF : KAMAL ABO SREEA
VICE EDITOR-IN- CHIEF : HAZEM H. GOMAA
EXECUTIVE EDITOR : AHMED M. ELHAWARI

Articles and notes should be sent to the dean of faculty of law and
editor- in- chief of the LAW AND ECONOMIC REVIEW, Zagazig
University, Faculty of Law- Zagazig - Sharkia Governerate,
Telephone: (2055) 328210 & 324595- Fax. : (2055) 328210



Mohammed A. Makkeen 1991

*ELEMENTS AND CONDITIONS OF DURESS IN
ISLAMIC DOCTRINE.

Said S. Goweliy 29

* USE OF ARMED FORCE IN PUBLIC IN-
TERNATIONAL LAW IN PEACE TIME.

Hazem H. Gomaa I
TO ELECTRONICA SICULA CASE JUDGMENT.
INTERNATIONAL COURT OF JUSTICE : COMMISSION
* DIPLOMATIC PROTECTION BEFORE THE IN-
ARTICLES

CONTENTS

1993

VOLUME V

LAW AND ECONOMIC REVIEW

FACULTY OF LAW
ZAGAZIG UNIVERSITY

